इकाई—15

भाषाविज्ञान – स्वरूप एवं क्षेत्र

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 भाषाविज्ञान की परिभाषा

15.3 भाषा के पक्ष

15.4 भाषाविज्ञान कला है या विज्ञान

15.5 भाषाविज्ञान के अध्ययन के प्रकार

15.5.1 वर्णनात्मक भाषाविज्ञान

15.5.2 ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

15.5.3 तुलनात्मक भाषाविज्ञान

15.5.4 संरचनात्मक भाषाविज्ञान

15.5.5 प्रायोगिक भाषाविज्ञान

15.6 भाषाविज्ञान का क्षेत्र

15.7 भाषाविज्ञान के अंग

15.7.1 ध्वनि विज्ञान

15.7.2 पद विज्ञान

15.7.3 वाक्य विज्ञान

15.7.4 अर्थ विज्ञान

15.7.5 कोश विज्ञान

15.7.6 भाषिक भ्गोल

15.8 भाषाविज्ञान का अन्य शास्त्रों से संबंध

15.8.1 भाषाविज्ञान तथा व्याकरण

15.8.2 भाषाविज्ञान तथा साहित्य

15.8.3 भाषाविज्ञान तथा दर्शन

15.8.4 भाषाविज्ञान तथा मनोविज्ञान

15.8.5 भाषाविज्ञान तथा इतिहास

15.8.6 भाषाविज्ञान तथा भ्गोल

15.8.7 भाषाविज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान

15.8.8 भाषाविज्ञान तथा शरीर विज्ञान

15.8.9 भाषाविज्ञान तथा भोतिक विज्ञान

15.9 पारिभाषिक शब्दावली

15.10 अभ्यासार्थ प्रश्न

15.0 उद्देश्य

एम.ए. पूर्वाद्ध संस्कृत पाठ्यक्रम की इकाई संख्या 14 में भाषाविज्ञान का स्वरूप एवं क्षेत्र का परिचय प्रस्तुत किया गया है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः–

- भाषा की संरचना तथा भाषा अथवा बोली के विभिन्न अवयवों को जान सकेंगे।
- भाषा के सम्बन्ध में उत्पन्न जिज्ञासाओं का समाधान कर सकेंगे।
- प्रागैतिहासिक खोजों के सम्बन्ध में भाषाविज्ञान की उपयोगिता जान सकेंगे।
- प्राचीन ग्रन्थों के पाठ–संशोधन एवं अर्थबोध को भाषाविज्ञान के माध्यम से जान सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहने के नाते उसे आपस में वार्तालाप करना पड़ता है। विचार–विनिमय के लिए मनुष्य शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करता है। आदिम अवस्था में मानस संकेतों के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान करता था। मानव के विकास के साथ ही भाषा का विकास भो हो रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मानव विकास का इतिहास भाषा को निरूपित करता है। मानव–शरीर में भाषा दैवीय अंश से प्रदत्त है जो सिर्फ मनुष्य को ही प्राप्त है। भाषा के वगैर मनुष्य भो पशुओं की तरह अपने भावों को स्पष्टतया आदान–प्रदान नहीं कर पाता। इस प्रकार भाषा सम्पूर्ण विश्व में अपने हृदयगत भावों को वाणी रूप में सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

अपने व्यापक रूप में भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को प्रकट करते हैं। किन्तु भाषा–विज्ञान में हम जिस भाषा का अध्ययन और विश्लेषण करते हैं वह उतनी व्यापक नहीं है। हम उन सभो साधनों को उसमें नहीं लेते हैं जिनके द्वारा विचारों को व्यक्त किया जाता है या हम अपने भावों का चिन्तन करते हैं। भाषा उसे कहते हैं जो बोली और सुनी जाती है, वह बोलना पशु–पक्षियों का या गूंगों का न होकर केवल मनुष्यों का होता है।

'भाषा–विज्ञान' नाम से ही प्रकट होता है। "भाषायाः विज्ञानम्–भाषाविज्ञानम्" अर्थात् भाषा का विज्ञान। इस प्रकार 'भाषा–विज्ञान' एक समासयुक्त पद है। अन्य अनेक शास्त्रों की संज्ञाओं की भाँति ही 'भाषाविज्ञान' भो एक अन्वर्थ संज्ञा है। 'भाषा' और 'विज्ञान' दो शब्दों से बना यह नाम इस शास्त्र की आत्मा एवं स्वरूप का पूर्णतया परिचय करा देने में समर्थ है।

'भाषा' शब्द संस्ड्डत की 'भाष्' धातु जिसका अर्थ व्यक्त वाक् (व्यक्तायांवाचि) से है, से निष्पन्न है तथा 'विज्ञान' शब्द 'वि' उपसर्गपूर्वक 'ज्ञा' धातु से 'ल्युट' (अन्) प्रत्यय लगाने पर बनता है। सामान्य रूप से 'भाषा' का अर्थ है 'बोलचाल की भाषा या बोली' और 'विज्ञान' का अर्थ है 'विशेष ज्ञान'।

भाषा मानव की प्रगति में विशेष रूप से सहायक रही ह। हमारे पूर्वपुरुषों के सारे अनुभव हमें भाषा के माध्यम से ही प्राप्त हुए हैं। हमारे सभो शास्त्र और उनसे होने वाला सम्पूर्ण लाभ, भाषा का ही परिणाम है। महाकवि 'दण्डी' के शब्दों में–

"इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायेत भ्‌वनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।" काव्यादर्श

15.2 भाषाविज्ञान परिभाषा

(1) **पतंजलि का महाभाष्य** – "व्यक्तां वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्तवाचः।' पशु– पक्षियों की भाषा अव्यक्त है और मनुष्यों की भाषा व्यक्त, क्योंकि इसमें वाणी रूप में प्रयुक्त वर्ण स्पष्ट होते हैं। अतएव महाभाष्यकार ने व्यक्त वर्णात्मक वाणी को ही भाषा माना है।

(2) "भाषाविज्ञान, भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट, उसके विकास तथा उसके ह्‌ास की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।" डॉ. श्यामसुन्दर दास (भाषा–रहस्य)

(3) "भाषाविज्ञान, उस विज्ञान को कहते हैं, जिसमें सामान्य रूप से मानवी भाषा का, किसो विशेष भाषा की रचना और इतिहास का, अन्ततः भाषाओं के वर्गों की पारस्परिक समानताओं और विशेषताओं का तुलनात्मक विचार किया जाता है।"डॉ. मंगलदेव शास्त्री (तुलनात्मक भाषा शास्त्र)

(4) 'सोपिस्ट' में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए प्लेटो ने कहा है कि – "विचार और भाषा में थोड़ा ही अन्तर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है,वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है, तो उसे भाषा कहते है।"

– प्लेटो

(5) "मनुष्य का मस्तिष्क विचार प्रकट करने के लिए ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग करता है जिन्हें भाषा की संज्ञा दी जाती है।

– जेस्परसन

(6) "जिन ध्वनि–चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय करता है, उनको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।"

– डॉ. बाबूराम सक्सेना

(7) "विभिन्न अर्थों में संकेतित शब्द–समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं।"

– आचार्य किशोरीदास वाजपेयी

(8) "जिस विज्ञान के अन्तर्गत वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के सहारे भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक् व्याख्या करते हुए, इन सभो के विषय में सिद्धान्तों का निर्धारण हो, उसे भाषाविज्ञान कहते है।"

– डॉ. भोलानाथ तिवारी

(9) "भाषा उच्चारणावयवों से उच्चरित अध्ययन–विश्लेषणीय यादृच्छिक ध्वनि– प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।"

– डॉ. भोलानाथ तिवारी

"भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि–संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा समाज–विशेष के लोग परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।"

इस परिभाषा में तीन बातें ध्यान देने योग्य प्रतीत होती है– (1) भाषा ध्वनि संकेत है, (2) वह यादच्छिक है, (3) वह रूढ़ है।

(1) भाषा को ध्वनि–संकेत कहना उसका वह भदक तत्त्व है जो उसे भावाभिव्यंजन के इंगित आदि अन्य साधनों से पृथक करता है। इंगित में भो विचार–विनिमय की क्षमता है, किन्तु वह ध्वनि–संकेत नहीं है। इसी तरह झंड़ी या लाल–हरी रोशनी से

अर्थ व्यक्त हो जाता है, किन्तु ध्वनि–संकेत नहीं होने से वह भो भाषा की सीमा में नहीं आती।

(2) भाषा यादृच्छिक संकेत है अर्थात् शब्द और अर्थ में कोई तर्क संगत सम्बन्ध नहीं है। उदाहरणार्थ, पशु–विशेष को कुत्ता या घोड़ा क्यों कहते हैं। यह कहना असंभव है। यदि इन ध्वनियों और इनसे बोधित होने वाले अर्थों में कोई नियत या यौक्तिक सम्बन्ध होता तो सभो भाषाओं में इन वस्तुओं के लिए ये ही ध्वनियाँ प्रयुक्त होती, किन्तु विभिन्न भाषाओं में इनके वाचक विभिन्न शब्द है।

(3) भाषा के ध्वनि–संकेत रूढ़–अर्थ–विशष में प्रसिद्ध होते हैं। यह प्रसिद्धि परम्परा से प्राप्त होती है। पहले से लोग वस्तु–विशेष के लिए वृक्ष शब्द का प्रयोग करते आ रहे हैं। उसे सुनकर आज उत्पन्न होने वाला बच्चा उस वस्तु के लिए वृक्ष का प्रयोग करने लगता है। तर्कहीन प्रयोग–प्रवाह ही रूढ़ि है। किसी भाषा म जितने ध्वनि–संकेत होते हैं, वे प्रायः रूढ़ ही होते हैं।

15.3 भाषा के पक्ष

फ्रांसिसी भाषाविज्ञानी 'द सोसूर' ने भाषा के तीन पक्ष स्वीकार किये हैं– (1) व्यक्तिगत, (2) सामाजिक, (3) सामान्य या सर्वव्यापक।

वैयक्तिक पक्ष को उसने 'पारोल' कहा है। पारोल के लिए अंग्रेजी में 'स्पीच' शब्द का प्रयोग होता है। हिन्दी में इसका कोई समानार्थक शब्द नहीं है। इसके लिए वाणी शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। भाषा की उत्पत्ति व्यक्ति से ही होती है क्योंकि ध्वनन (ध्वनि के उच्चारण) की क्षमता उसी में रहती है। व्यक्तिगत भाषा या 'वाणी' के दो अनिवार्य पहलू हैं – बोध और अभिव्यंजन। बोध आदान का साधक है, अभिव्यंजन प्रदान का। बोध की सहायता से भाषा ग्रहण की जाती है और अभिव्यंजन के द्वारा वह फिर समाज को दी जाती है। बोध और अभिव्यंजन का यह क्रम लगातार चलता रहता है। दो आदमियों की बातचीत में बारी–बारी से दोनों व्यक्ति वक्ता और श्रोता बनते हैं। वक्ता के रूप में वे अभिव्यंजन के आधार बनते हैं और श्रोता के रूप में बोध के।

भाषा के सामाजिक या सामुदायिक रूप को द सोसूर ने 'लाँग' कहा है। अंग्रेजी में इसे 'टंग' कहते हैं। समुदाय विशेष में प्रचलित और व्यवहृत भाषा को ही लाँग् कहते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि 'लाँग' है। भाषा का सामाजिक पक्ष ध्वनन और श्रवण पर विचार करता है।

भाषा के सामाजिक पक्ष के बाद सामान्य पक्ष आता है जिसके लिए द सोसूर ने 'लाँगाज' शब्द का व्यवहार किया ह। लाँगाज से अभिव्यंजना के सामान्य माध्यम का अर्थात् मनुष्य मात्र की भाषा का बोध होता है। भाषा यहाँ पहुँचकर संप्रेषण का सामान्य साधन बन जाती है और उससे ध्वनन, श्रवण आदि मानव–भाषा संबंधी जितनी जटिल प्रक्रियाएँ हैं, उन सबका बोध होता है। भाषा का यह भद रहित सार्वभोम रूप है। इसे अधिभाषा कह सकते हैं।

15.4 भाषाविज्ञान कला है या विज्ञान

भाषाविज्ञान कला है – कला का संबंध मानवरचित वस्तुओं या विषयों से होता है। यही कारण है कि कला व्यक्ति विशिष्ट होने के साथ ही साथ देश विशिष्ट एवं कला विशिष्ट भो हआ करती है। कला का संबंध हृदय की रागात्मिका वृत्ति से होता है। उसमें हृदय को सौन्दर्य की अनुभ्ति होती है। भाषाविज्ञान कला नहीं है क्योंकि उसका संबंध हृदय की रागात्मिका वृत्ति से नहीं है। उसका विषय हृदय प्रधान न होकर बुद्धि प्रधान है। उसका उद्देश्य मनोरंजन करना एवं सौन्दर्यानुभ्ति कराना भो नहीं है। वह तो हमारी ज्ञान पिपासा की तृप्ति करता है। इसी प्रकार वह देश विशिष्ट एवं काल विशिष्ट भो नहीं है।

भाषाविज्ञान विज्ञान है— भाषाविज्ञान कला नहीं है, यह निश्चित हो जाने के उपरान्त प्रश्न उपस्थित होता है क्या भाषाविज्ञान, भोतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान की भाँति विशुद्ध विज्ञान या पूर्ण विज्ञान है?

भाषाविज्ञान में चूंकि तथ्यों का संकलन होता है, उनका विश्लेषण होता है तथा उनसे निष्कर्ष निकाले जाते हैं और ध्वनि—नियम अधिकांशतः विकल्प रहित ही है, अतः उक्त विद्वानों के अनुसार भाषाविज्ञान को मानविकी (कला) एवं भाषाविज्ञान के मध्य में रखा जा सकता है।

15.5 भाषाविज्ञान के अध्ययन के प्रकार

भाषा का पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन ही भाषाविज्ञान है और किसी भो विषय का पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन तभो संभव होता है, जब हम एक निश्चित प्रक्रिया को अपनाकर उनमें प्रवृत्त होते हैं।

भाषाविज्ञान भो किसी भाषा के कारण—कार्य मूलक युक्तिपूर्ण विवेचन—विश्लेषण के लिए कुछ निश्चित प्रक्रियाओं में बँधकर चलता है। वे पाँच हैं—

15.5.1 वर्णनात्मक भाषाविज्ञान— जिसमें किसी एक भाषा के, किसी एक ही काल के स्वरूप की व्याख्या या वर्णन रहता ह। इस प्रकार के अध्ययन से हमें विशिष्ट भाषा का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। संस्कृत भाषा का पणिनीय व्याकरण इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

15.5.2 ऐतिहासिक भाषाविज्ञान — जिसमें किसी एक भाषा का उसके विभिन्न अंगों, ध्वनि, पदरचना, वाक्य रचना आदि के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययन में हमें किसी भाषा के प्राचीनकाल से लेकर आज तक के साहित्यिक, असाहित्यिक (बोलचाल) अथवा मृत आदि रूपों का परिचय मिल जाता है। भाषा के इस प्रकार के ऐतिहासिक अध्ययन में प्राचीन साहित्य, पुरातनग्रन्थ तथा शिलालेख आदि हमारे अध्ययन के साधन बन जाते हैं। 19वीं शताब्दी को ऐतिहासिक भाषाविज्ञान का स्वर्णयुग माना जाता है।

15.5.3 तुलनात्मक भाषाविज्ञान — जिसमें किन्हीं दो या दो से अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। जिन भाषाओं को अध्ययन का विषय बनाया जाता है, उनके विभिन्न अंगों की तुलना, किसी एक काल के आधार पर अथवा विभिन्न कालों के आधार पर की जाती है। तुलनात्मक भाषाविज्ञान का सूत्रपात 18वीं शताब्दी में विलियम जोन्स ने किया था। किन्तु इसका विकास 19वीं शताब्दी में हुआ है।

15.5.4 संरचनात्मक भाषाविज्ञान— जिसम भाषा में प्रयुक्त सभो तत्त्वों का पारस्परिक विशिष्ट संदभ में क्रमशः अध्ययन किया जाता है। भाषाविज्ञान के 'जेनेवा विद्यालय' से सम्बद्ध, स्विट्जरलैण्ड निवासी 'द सस्यूर' को संरचनात्मक भाषाविज्ञान का जनक कहा जाता है। भाषा के अध्ययन में संरचनात्मक भाषाविज्ञान से गणित के समान ही निश्चित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। इसी का नाम 'गठनात्मक भाषाविज्ञान' भो है।

15.5.5 प्रायोगिक भाषाविज्ञान— जिसमें उपर्युक्त चारों पद्धतियों को प्रयोग में लाना सिखाया जाता है, अर्थात् उनका व्यावहारिक ज्ञान कराया जाता है। देशी अथवा विदेशी भाषा को सिखलाने की पद्धति, उच्चारण सिखलाने की प्रक्रिया, एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने की शैली, भाषा—अध्ययन के लिए आविष्कृत मन्त्रों एवं उपकरणों का व्यावहारिक ज्ञान तथा भाषा—सर्वेक्षण की पद्धति आदि भो प्रायोगिक भाषाविज्ञान के ही अन्तर्गत है।

15.6 भाषाविज्ञान का क्षेत्र

जो क्षेत्र मानव और उसकी भाषा का है, वही क्षेत्र भाषाविज्ञान का भो है। भाषाविज्ञान का सम्बन्ध न केवल विश्वभर के सभ्य मनुष्यों की भाषाओं से है, अपितु असभ्य एवं वन्य (जंगली) मनुष्यों की बोलियों से भो है। इस प्रकार भाषाविज्ञान में मात्र साहित्यिक भाषाओं

का ही वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जाता। बल्कि असाहित्यिक और मात्र बोलचाल की भाषाओं का अध्ययन भो किया जाता है साथ ही मृत कही जाने वाली भाषाओं का अध्ययन भो भाषाविज्ञान के क्षेत्र के ही अन्तर्गत है।

भाषाविज्ञान का सम्बन्ध किसी भाषा के किसी एक विशेष काल के तथ्यों से ही नहीं, अपितु सभो कालों के तथ्यों से होता है, जिन्हें भाषाविज्ञान न केवल एकत्र व्यवस्थित और वर्गीकृत करता है। बल्कि उनके आधार पर सामान्य सिद्धान्तों का निर्धारण भो करता है। इस प्रकार से भाषाविज्ञान को भाषा का दर्शनशास्त्र या तर्कशास्त्र भो कह सकते हैं।

तुलनात्मक भाषाविज्ञान में विशेष रूप से भाषा के जीवन के भिन्न–भिन्न कालों के तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन करके भाषा का इतिहास प्रस्तुत किया जाता है। इसमें ध्वनियों के उच्चारण, उनसे बने अक्षरों, अक्षरों से बने शब्दों–पदों और उसने बने वाक्यों की रचना आदि अनेक विषयों का विवेचन किया जाता है। इसमें भाषा की उत्पत्ति, उसका विकास अर्थात् उसमें हुए परिवर्तन आदि, सभो महत्त्वपूर्ण विषय समाहित रहते हैं। यही कारण है कि भाषाविज्ञान की अध्ययनगत समस्या स्थिर न होकर गत्यात्मक है।

15.7 भाषाविज्ञान के अंग

यद्यपि विषय का पूर्ण ज्ञान कराना ही प्रत्येक विज्ञान का लक्ष्य होता है, तथापि इस लक्ष्य की सफलता के लिए उसे अपने विषय को विभिन्न भागों या अंगों में विभाजित करके, उसका सूक्ष्म अध्ययन करना पड़ता है। विषय का विभिन्न अंगों में यह विभाजन वस्तुतः उस विषय का पूर्ण ज्ञान कराने में सहायक होता है। इस दृष्टि से भाषाविज्ञान में, अध्ययन के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं–

(i) ध्वनि विज्ञान (Phonology)

(ii) पद विज्ञान (Morphology)

(iii) वाक्य विज्ञान (Syntax) और

(iv) अर्थ विज्ञान (Semantics)

15.7.1 ध्वनि विज्ञान – व्यक्त वाक् या मानव–भाषा के अध्ययन का सर्वप्रमुख तत्त्व ध्वनि है। ध्वनि (वर्ण) के अभाव में भाषा का भवन निर्मित ही नहीं हो सकता। अतः, भाषाविज्ञान में भो ध्वनि के अध्ययन को सर्वप्रमुख स्थान दिया जाता है और इस प्रकार के अध्ययन को ध्वनि–विज्ञान अर्थात् ध्वनियों का विज्ञान (विशेष ज्ञान) कहा जाता है। ध्वनि–विज्ञान के अन्तर्गत सर्वप्रथम, मानव–शरीर के उच्चारण–उपयोगी अवयवों; जैसे, स्वर–यन्त्र, मुख, जिह्वा, तालु आदि का परिचय कराया जाता है। तदुपरान्त, उनसे उत्पन्न ध्वनियों (वर्णों) का उच्चारण–स्थान और उच्चारण–प्रयत्न की दृष्टि से वर्गीकरण किया जाता है। पुनः, कालक्रम स उन ध्वनियों में कब–कब, कैसे–कैसे विकार हुए, यह बतलाया जाता है। उन विकारों के कारणों को प्रस्तुत किया जाता है; और अन्त में, उस अध्ययन के आधार पर कुछ निश्चित ध्वनि–नियमों का निर्धारण किया जाता है।

संक्षेप में, उच्चारण–अवयव, ध्वनियों की संख्या और उनका वर्गीकरण, ध्वनि– विकार की दिशाएँ और कारण तथा ध्वनि–नियम आदि ध्वनि–विज्ञान का विषय है।

15.7.2 पद विज्ञान – ध्वनियों को मिलाकर शब्द या पद बनाये जाते हैं। अतः ध्वनियों के अध्ययन के उपरान्त भाषाविज्ञान में द्वितीय स्थान पर पद–विज्ञान का महत्त्व है। इसके अन्तर्गत, पदरचना या पदों का निर्माण, उनके भद; जैसे– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय आदि, पदांश अर्थात् पद के अर्थसूचक तथा सम्बन्धसूचक अंश, जैसे– धातु, प्रत्यय, उपसर्ग आदि का विचार किया जाता है।

15.7.3 वाक्य विज्ञान – जिस प्रकार ध्वनियों से पद बनते हैं, उसी प्रकार पदों से वाक्य बनते हैं। वाक्य विज्ञान के अन्तर्गत, वाक्य–रचना किस प्रकार होती है? कितने प्रकार के वाक्य होते हैं? आदि विषयों पर ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाता है।

15.7.4 अर्थ विज्ञान – ध्वनि, पद और वाक्य भाषा का शरीर है तथा अर्थ भाषा की आत्मा है।

शरीर पर विचार करने के साथ ही भाषा की आत्मा – अर्थ पर विचार करना भो उपयुक्त होता है। अतः, अर्थविज्ञान भो भाषाविज्ञान का महत्त्वपूर्ण अंग है। अर्थविज्ञान के अन्तर्गत, शब्दों या पदों का निश्चित अर्थों में निर्धारण कैसे हुआ, कालक्रम से उनके अर्थ में क्या परिवर्तन हुआ? तथा उस अर्थपरिवर्तन के कारण क्या है? आदि–आदि विषयों पर विचार किया जाता है।

निम्नलिखित दो, अन्य विषयों को भो आजकल भाषाविज्ञान के अंगों में गिना जाता है।

15.7.5 कोश विज्ञान (Lexicology) – किसी भाषा में प्रयुक्त समस्त अर्थयुक्त तत्त्वों को वर्णानुक्रम–रूप में सूचीबद्ध करना ही उस भाषा को कोश बनाना कहा जाता है। प्राचीन भारतीय आर्य–भाषा का वैदिक भाषा से सम्बन्धित 'निघण्टु' ग्रन्थ इसका प्राचीनतम उदाहरण है। भाषा में प्रयुक्त शब्दों की व्युत्पत्ति, शब्दों के अर्थों का निर्धारण तथा कोश–निर्धारण की पद्धति आदि कोशविज्ञान का ही विषय है। प्राचीनकाल की अपेक्षा आधुनिक कोशविज्ञान निश्चय ही अधिक वैज्ञानिक है।

15.7.6 भाषिक भ्गोल (Linguistic Geography) – भोगोलिक क्षेत्र–विस्तार की दृष्टि से किसी क्षेत्र–विशेष में कौनसी भाषा बोली जाती है? उसकी कितनी उपबोलिया हैं और वे कहाँ–कहाँ प्रयुक्त होती हैं? भाषाओं की सीमा का निर्धारण कैसे होता है? सीमाओं के मिलने वाली भाषाएँ या बोलियाँ एक–दूसरी को किस प्रकार प्रभावित करती है? सीमाओं पर स्थित भाषा को किस भाषा में परिगणित किया जाय? आदि–आदि विषय, भाषिक भ्गोल के अन्तर्गत आते हैं।

15.8 भाषाविज्ञान का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध

मानव–समाज से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा कोई भो विज्ञान अथवा शास्त्र नहीं है, जिसका सम्बन्ध भाषाविज्ञान से न हो। इसका मुख्य कारण यही है कि मानवसमाज से सम्बन्धित विज्ञानों में भाषा का प्रयोग किसी न किसी रूप में होता ही है और जैसे ही किसी विज्ञान या शास्त्र का सम्बन्ध भाषा से जुड़ता है, वैसे ही वह शास्त्र भाषाविज्ञान से सम्बन्धित हो जाता है। इस दृष्टि से देखें तो जितने भो अन्य शास्त्र हैं, उन सभो का सम्बन्ध भाषाविज्ञान से है। तथापि, कुछ विज्ञान या शास्त्र ऐसे हैं, जिनका भाषाविज्ञान से घनिष्ठ या पूर्वापर सम्बन्ध है, उन्हीं शास्त्रों से भाषाविज्ञान के सम्बन्ध पर यहाँ विचार कर लेना उचित है।

15.8.1 भाषाविज्ञान तथा व्याकरण

साम्य – भाषाविज्ञान और व्याकरण दोनों ही 'शब्द–शास्त्र' हैं। दोनों का ही सम्बन्ध भाषा से है और इसीलिये दोनों का परस्पर भो घनिष्ठ सम्बन्ध है। वर्णनात्मक भाषाविज्ञान तो वस्तुतः व्याकरण का ही दूसरा नाम है। उपर्युक्त समानता के साथ इन दोनों में कुछ मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं–

भाषाविज्ञान अंगी है, व्याकरण उसका अंग है। व्याकरण भाषा में प्रयुक्त शब्दों की साधुता–असाधुता पर विचार करता है। शुद्ध शब्द क्या है, इसका उत्तर देता है, किन्तु शब्दों के वे रूप कैसे बने, कहाँ से आये, कब आये तथा क्यों आये? आदि प्रश्नों का समाधान व्याकरण नहीं करता; इनका उत्तर हमें भाषाविज्ञान से ही मिलता है। संक्षेप में, व्याकरण केवल क्या का उत्तर देता है, जबकि भाषाविज्ञान क्यों, कैसे और कब का भो उत्तर देता है। व्याकरण में वर्णन की प्रधानता होती है किन्तु भाषाविज्ञान में व्याख्या एवं विश्लेषण की। भाषा–विज्ञान यदि अंगी है तो व्याकरण उसका अंग मात्र है।

व्याकरण कालविशिष्ट एवं देशविशिष्ट होता है, भाषाविज्ञान सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक। भाषाविज्ञान को 'व्याकरण का व्याकरण' भो कहा जाता है। व्याकरण रूढ़िवादी होता है, भाषाविज्ञान प्रगतिवादी। व्याकरण का सम्बन्ध केवल विशिष्ट एवं साहित्यिक भाषा से होता है, पर भाषाविज्ञान का सम्बन्ध असभ्य एवं जंगली मनुष्यों की बोली से भो होता है। भाषाविज्ञान और व्याकरण एक–दूसरे के उपकारी भो हैं।

15.8.2 भाषाविज्ञान तथा साहित्य

भाषाविज्ञान एक विज्ञान है, जबकि साहित्य कला है। दोनों में पर्याप्त अन्तर है। भाषाविज्ञान में भाषा का अध्ययन उसके स्वरूप को जानने के लिए किया जाता है, जबकि साहित्य में भाषा का अध्ययन साहित्य के अर्थ को समझने के लिए किया जाता है। भाषाविज्ञान का सम्बन्ध मस्तिष्क से अधिक है, साहित्य का सम्बन्ध हृदय की रसास्वादन– वृत्ति से है। प्रथम का क्षेत्र विस्तृत है, क्योंकि उसमें साहित्य में अप्रयुक्त भाषाओं एवं बोलियों का भो अध्ययन होता है। द्वितीय का क्षेत्र सीमित होता है, क्योंकि उसमें केवल साहित्यिक भाषाओं का ही अध्ययन होता है। साहित्य और भाषाविज्ञान एक–दूसरे के उपकारी भो हैं। भाषाओं के प्राचीन रूपों को सुरक्षित रखकर साहित्य, भाषाविज्ञान के लिए अध्ययन–सामग्री प्रदान करता है, जिसके बिना भाषाविज्ञान का विकास सम्भव नहीं है। इस प्रकार साहित्य, भाषाविज्ञान के लिए कोषागार का कार्य करता है। भाषाविज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति द्वारा एक साहित्य की भाषा से परिचित व्यक्ति अन्य साहित्यों की भाषा और तदनन्तर साहित्य से भो शीघ्र ही परिचय प्राप्त कर सकता है। थोड़े ही समय में ऐसा व्यक्ति बहुभाषाविद् के साथ–साथ बहुसाहित्यविद् भो बन सकता है।

अतः भाषाविज्ञान और साहित्य एक–दूसरे के उपकारी होने के कारण परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।

15.8.3 भाषाविज्ञान तथा दर्शन

आत्मा–परमात्मा, जीवन–मृत्यु आदि आध्यात्मिक क्षेत्र के रहस्यों का विचार दर्शन का विषय है। जीवन और जगत के अन्य अनेक प्रश्नों की भाँति ही भाषा का प्रश्न भो पर्याप्त रहस्यपूर्ण है। शब्द और अर्थ के सम्बन्ध पर विचार करने वाले सभो भारतीय मनीषी दार्शनिक ही थे। 'पतञजलि' तथा 'भर्तृहरि' ने भाषा पर दार्शनिक दृष्टि से ही विचार किया है। स्फोटवाद का सिद्धान्त, शब्दब्रह्म की कल्पना आदि सभो दार्शनिक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। इसी प्रकार भाषा के सम्बन्ध में, जो अनेक जिज्ञासायें मानव–मस्तिष्क में उत्पन्न होती है और जिनका समाधान भाषाविज्ञान के द्वारा होता है, वे सब भो दर्शन के ही अन्तर्गत आती हैं। भारत ही नहीं, पश्चिम के देशों में भो भाषा पर सर्वप्रथम विचार करने वाले विद्वान दार्शनिक ही थे। उदाहरणार्थ, प्लेटो, अरस्तू आदि ने शब्द और अर्थ के सम्बन्ध पर पर्याप्त विचार किया है। इस प्रकार भाषाविज्ञान और दर्शन दोनों ने मिलकर चूंकि भाषा–सम्बन्धी अनेक प्रश्नों का समाधान किया है। अतः इन दोनों का परस्पर भो घनिष्ठ सम्बन्ध है।

15.8.4 भाषाविज्ञान तथा मनोविज्ञान

भाषाविज्ञान तथा मनोविज्ञान, दोनों ही विज्ञान है। एक में यदि भाषा का अध्ययन किया जाता है, तो दूसरे में मानव–मन का। 'भाषा' और 'मन' का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। मन की प्रेरणा से ही भाषा प्रस्फुटित होती है। फलतः इनसे सम्बन्धित विज्ञानों का परस्पर सम्बन्धित होना भो स्वाभाविक ही है। भाषा, मनुष्य के भावों तथा विचारों का वाहन है। मनुष्य के भावों और विचारों का उसकी भाषा पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। भाषाविज्ञान के अन्तर्गत, शब्दों का अर्थ–परिवर्तन एवं ध्वनि–परिवर्तन आदि, कई समस्याओं का समाधान मनोविज्ञान के सहारे ही किया जाता है। भाषाओं के आदिम रूप को समझने में असभ्य एवं अविकसित जातियो की बोलियों का अध्ययन उपादेय सिद्ध हो सकता है। इसी प्रकार बच्चों द्वारा भाषा सीखने के प्रयत्नों से, आदि मानव द्वारा भाषा विकास की दिशा में किये गये प्रयत्नों का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है, अतः बच्चों और आदिम जातियों के

मनोविज्ञान का ज्ञान भाषा की उत्पत्ति की समस्या को सुलझाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह थोड़े प्रयास से ही अधिक कार्य निष्पन्न कर लेना चाहता है। इस प्रवृत्ति को संक्षेप में 'प्रयत्नलाघव' कहते हैं। मानव मनोविज्ञान को समझने के लिए भाषाविज्ञान से बड़ी सहायता मिलती है।

15.8.5 भाषा तथा इतिहास

भाषाविज्ञान तथा इतिहास का परस्पर स्वाभाविक सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे को समझने में सहायक होते हैं। पदविकास, ध्वनिविकास, अर्थविकास आदि को समझने में इतिहास भाषाविज्ञान का मार्गदर्शन करता है। हिन्दी में विभिन्न–विदेशी शब्दों का आगमन कैसे–कैसे और कब–कब हुआ, इसका ज्ञान देश के इतिहास द्वारा विदेशियों के आक्रमणों की जानकारी आदि से ही सम्भव है। समाज में हुए धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से भाषा में भो अनेक परिवर्तन घटित होते हैं। आर्यों की प्राचीन सभ्यता एवं संस्डुति का उद्‌घाटन भाषाविज्ञान की ही देन है। इतिहास भो जिन तथ्यों को प्रस्तुत नहीं कर पाता, भाषाविज्ञान के द्वारा उनकी भो उपलब्धि हमें हो जाती है। प्रागैतिहासिक काल की खोजों से इस बात की सत्यता पूर्णरूप से प्रमाणित हो चुकी है। इतिहास तथा पुरातन संस्कृति के अनेक महत्त्वपूर्ण अंश, हमें आज भाषाविज्ञान की कृपा से ही प्राप्त हुए हैं– प्राचीन मिस्त्री और असीरियन संस्कृति इसके प्रमाण हैं।

15.8.6 भाषाविज्ञान तथा भ्गोल

भाषा का प्रयोग करने वाला प्रत्येक मानव किसी न किसी भोगोलिक वातावरण में रहता है। भोगोलिक वातावरण का वहाँ के निवासी मानवों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। फलतः, मानव द्वारा प्रयुक्त भाषा भो मानव के विशिष्ट भोगोलिक वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रहती है। इस प्रकार भाषाविज्ञान और भ्गोल भो परस्पर सम्बन्धित हो जाते हैं। प्रयोग क्षेत्र निर्धारित करने में भ्गोल से बहुत सहायता मिलती है। भाषाओं में होने वाले परिवर्तन की गति का निश्चय भो भ्गोल का ज्ञान प्राप्त किये बिना कठिन है, क्योंकि जिस प्रदेश में आवागमन की सुविधायें अधिक हैं तथा भोगोलिक बाधायें–पर्वत, नदी, सघन वन आदि कम हैं वहाँ की भाषा में परिवर्तन अपेक्षाकृत अधिक वेग से होता है। इसके विपरीत घने वनों, ऊँचे पर्वतों और बड़ी नदियों एवं दलदलों से घिरे प्रदेशों की भाषा में परिवर्तन बहुत देर से होता है।

शब्दों के अर्थ एवं ध्वनि–परिवर्तन पर भो भोगोलिक प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ, वैदिककाल म 'उष्ट्र' शब्द का अर्थ 'जंगली भसा' था। तत्कालीन आर्य परिवेश में वही सबसे बड़ा और उपयोगी पशु था। अतः जब आर्य लोग फारस की दिशा में बढ़े, तो वहाँ उन्होंने सबसे बड़े और उपयोगी पशु 'ऊँट' को ही 'उष्ट्र' कहना प्रारम्भ कर दिया।

ध्वनि–परिवर्तन पर भो भोगोलिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। शीतप्रधान प्रदेशों के निवासी जिन शब्दों के उच्चारण में मुख कम खोलते हैं और श्वास को बाहर कम निकालते हैं उन्हीं शब्दों के उच्चारण में उष्ण प्रदेशों के निवासी मुख अधिक खोलते हैं तथा अधिक श्वास बाहर निकालते हैं। इस प्रकार ध्वनियाँ संवृत या विवृत हो जाती हैं। उदाहरणार्थ– एक ही 'अ' (या a) ध्वनि, शीत और उष्ण प्रदेशों में भिन्न–भिन्न प्रकार से उच्चारित होती है। भिन्न–भिन्न भाषाओं में प्राचीन नदियों, पर्वतों आदि के नामों का ज्ञान और उनके तुलनात्मक अध्ययन से भ्गोल के अध्ययन को एक नयी दिशा प्राप्त होती है।

15.8.7 भाषाविज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान

ये दोनों ही विज्ञान समाज–सापेक्ष होने के कारण परस्पर सम्बन्धित है। सामाजिक विज्ञान में समाज की दृष्टि से मानव के आचार–विचार, रहन–सहन, खानपान तथा रीति– रिवाजों का अध्ययन होता है। भाषा भो सामाजिक सम्पत्ति होने के कारण समाजविज्ञानी के अध्ययन का विषय बन जाती है। कारण, समाज में होने वाले अनेक परिवर्तनों का कारण भाषा होती है।

इसके विपरीत भाषा भो सामाजिक नियन्त्रण में रहती है। भाषा में होने वाले अनेक परिवर्तनों का कारण समाज में मान्यता प्राप्त परम्परायें एवं रीति–रिवाज ही होते हैं। भाषा से पुराने शब्दों को निकालना, उसमें नये शब्दों का लेना तथा शब्दों के अर्थों में परिवर्तन होना आदि बातें समाज–सापेक्ष ही हैं। अतः समाजविज्ञान तथा भाषाविज्ञान का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। हाँ, तुलना करने पर समाजविज्ञान का क्षेत्र जहाँ विस्तृत है, वहाँ भाषाविज्ञान का क्षेत्र सीमित है।

15.8.8 भाषाविज्ञान तथा शरीर विज्ञान

भाषा का सम्बन्ध वक्ता तथा श्रोता से है। वक्ता के मुख से उच्चारित भाषा ही श्रोता के कानों द्वारा सुनी जाकर भावाभिव्यक्ति में सफल होती है। संक्षेप में वक्ता के शरीर में स्थित वाग्यन्त्र तथा श्रोता के शरीर में विद्यमान श्रवणयन्त्र का सम्बन्ध शरीरविज्ञान से ही है। वाग्यन्त्र में फेफड़े, श्वासनली, स्वरतन्त्रियाँ, गलबिल, नासिकाविवर, मुखविवर तथा उसमें स्थित कण्ठ, तालु, दन्त, जिह्वा तथा ओष्ठ आदि का ज्ञान, जहाँ शरोरविज्ञान से होता है, वहाँ इन अंगों से उत्पन्न ध्वनियों तथा उनके अध्ययन का सम्बन्ध भाषाविज्ञान से है। ध्वनियों के ठीक–ठीक उच्चारण के लिए शरीरविज्ञान का थोड़ा ज्ञान नितान्त आवश्यक है। हृस्व, दीर्घ, प्लुत और उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित उच्चारण भो शरीर विज्ञान के बिना संभव नहीं है। अतः, भाषाविज्ञान तथा शरीरविज्ञान का परस्पर सापेक्ष सम्बन्ध है।

15.8.9 भाषाविज्ञान तथा भौतिकविज्ञान

वक्ता के मुख से उच्चारित भाषा श्रोता के कानों तक कैसे पहुँचती है यह विषय भोतिकविज्ञान का ही है। वही बतलाता है कि आकाश में व्याप्त 'ईथर' संज्ञक पदार्थ, ध्वनि की तरंगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है। यह 'ईथर' नाम का पदार्थ क्या है और
ध्वनि–तरंगों को किस प्रकार वहन करता है? क्या ध्वनियों की गति को घटाया–बढ़ाया जा सकता है? आदि–आदि प्रश्नों का समाधान भोतिकविज्ञान से ही होता है। अतः, जिस प्रकार अपने मानसिक आधार के कारण भाषा मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखती है और इस प्रकार भाषाविज्ञान तथा मनोविज्ञान का सम्बन्ध बनता है ठीक उसी प्रकार अपने भोतिक आधार के कारण भाषा, भोतिकविज्ञान से सम्बन्ध रखती है और इस प्रकार भाषाविज्ञान तथा मनाविज्ञान का सम्बन्ध बनता है, ठीक उसी प्रकार अपने भोतिक आधार के कारण भाषा, भोतिकविज्ञान से सम्बन्ध रखती है तथा इस प्रकार भाषाविज्ञान और भोतिकविज्ञान में सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

15.9 पारिभाशिक शब्दावली

इस प्रकार इस इकाई में हमने भाषा की संरचना तथा भाषा अथवा बोली के विभिन्न अवयवों को जाना। भाषा के सम्बन्ध में उत्पन्न जिज्ञासाओं का समाधान भी प्राप्त किया । इस इकाई में प्रागैतिहासिक खोजों के सम्बन्ध में भाषाविज्ञान की उपयोगिता काअवबोध हुआ। प्राचीन ग्रन्थों के पाठ–संशोधन एवं अर्थबोध को भाषाविज्ञान के माध्यम से जानने के क्रम में यह इकाई अत्यधिक लाभप्रद सिद्ध हुई है।

15.10अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भाषा किसे कहते हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट करो।
2. भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला? स्पष्ट कीजिए।
3. भाषाविज्ञान के विभिन्न अंगों का वर्णन कीजिए।
4. भाषाविज्ञान का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

15.11 सारांश

भाषाविज्ञान भाषा के सम्बन्ध में उत्पन्न हमारी सभो जिज्ञासाओं का समाधान करके न केवल हमें मानसिक सन्तोष प्रदान करता है अपितु हमारी भाषा सम्बन्धी पकड़ को मजबूत बनाता है। आदिम मानव से लेकर आज तक के मानव के विकास को जानने के लिए भाषाविज्ञान हमारा पथ प्रदर्शक बनता है। विभिन्न भाषाओं का अध्ययन न केवल ज्ञानार्जन की दृष्टि से उपयोगी है अपितु इससे भिन्न–भिन्न जातियों और देशों के विषय में मनुष्य का दृष्टिकोण उदार बनता है और उसके हृदय में विश्वबन्धुत्व एवं विश्व मैत्री की भावना प्रबल होती है। संसार के समस्त ज्ञान एवं विज्ञान भाषा का ही आधार लेकर चलते है और भाषा का अपना सम्बन्ध भाषाविज्ञान से होने के कारण सभो विज्ञानों का सम्बन्ध भाषाविज्ञान से जुड़ जाता है। इस दृष्टि से भो भाषाविज्ञान का महत्त्व एवं उपयोगिता सवमान्य है।

15.12 सहायक पुस्तकें

1. भाषा विज्ञान,भोलानाथ तिवारी,किताब महल,इलाहाबाद,1951.
2. भाषा और भाषाविज्ञान, प्रो. रामाश्रय मिश्र,उन्मेष प्रकाशन, पुणे,1986.
3. आधुनिक भाषाविज्ञान, डॉ. राममणि शर्मा,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2003.
4. भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र, डॉ. कपिल देव द्विवेदी,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,2002.